चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	31.1.24	5	1-5

हकृवि ने विकसित की गेहूं की दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज वाली नई किस्म डब्ल्यू एच 1402

हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ : कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, 30 जनवरी (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भुरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी क़िस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है। कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है।

डब्ल्यू एच 1402 की बिजाई का उचित समय व बीज की मात्रा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाहुजा ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्तूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म को दो पानी जिसमें पहला पानी बीजाई के 20-25 दिन बाद शिखर जड़े निकलते समय व दूसरा पानी बीजाई के 80-85 दिन बाद बालियां निकलते समय देने की जरूरत है।

हकृवि में आयोजित प्रेसवार्ता के दौरान पत्रकारों से रुबरु होते हुए कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की विशेषताएं

गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है तथा 147 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वेट (77.7 केजी/एचएल) लोह तत्व (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। अत-पौष्टिकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

विश्वविद्यालय ने गत 3 वर्षों में निम्नलिखित किस्में अनुमोदित व चिन्हित की

विश्वविद्यालय ने गत 3 वर्ष में विभिन्न फसलों की 23 किस्में अनुमोदित की हैं जिनमें गेंहू की डीबी डब्ल्यूएच 221 व डब्ल्यू एच 1270, बाजरा की एचच्चबी 67 संशोधित-2, सरसों की आरएच 1424 एवं आरएच 1706, चना की एचसी 6, गन्ने की सीओएच 160, मक्का की अंतर संस्थागत पूसा एचएम 4 (शिशु) एवं पूसा एचक्यूपीएम 1 संशोधित, ज्वार की सीएसवी 53 एफ, एचजे 1514 व हाइब्रिड एचजेएच 1513, जई की एचएफओ 427, एचएफओ 529, एचएफओ 607, एचएफओ 611, एचएफओ 707, एचएफओ 806, मटर की एचएफपी 1428 व एचएफपी 1426, बाकला की एचएफबी-2, चंद्रशूर एचएलएस-4, करेला की एचकेएच 56 शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	31.1.24	8	3-6

हकृवि ने विकसित की गेहूँ की नई किस्म

• हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ : कुलपति कम्बोज

सच कहूँ/श्याम सुन्दर सरदाना
हिसार।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. कम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भूरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है।

प्रेसवार्ता के दौरान पत्रकारों से रुबरु होते हुए कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज।

कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नत्रजन 90, फास्फोरस 60, पोटाश 40, जिंकसल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई दो पानी में ही अधिक उपज ले सकते हैं, क्योंकि दिन प्रतिदिन भू-जल अधिक दोहन के कारण नीचे जा रहा है। अंतः यह नई किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी।

डब्ल्यू एच 1402 की बिजाई का उचित समय व बीज की मात्रा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्तूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म को दो पानी जिसमें पहला पानी बीजाई के 20-25 दिन बाद शिखर जड़े निकलते समय व दूसरा पानी बीजाई के 80-85 दिन बाद बालियां निकलते समय देने की जरुरत है। इस टीम में डॉ. एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पूजा गुप्ता व पवन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	31.1.24		

दैनिक भास्कर

गेहूं की नई किस्म डब्लयूएच 1402 विकसित

दो बार की सिंचाई में ही पक कर तैयार हो जाएगी फसल

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग ने दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यूएच 1402 इजाद की है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिह्नित की गई है। इसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है।

एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यूएच 1402 की दो पानी में औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है। यह किस्म पीला रतुआ, भूरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है।

पत्रकारों से बातचीत करते हकृवि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

100 दिन में निकल आती हैं गेहूं की बालियां

गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन ने बताया कि 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है तथा 147 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी 14 सेंटीमीटर व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है।

इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नत्रजन 90, फास्फोरस 60, पोटाश 40, जिंकसल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	31.1.24	1	6-8

हकृवि ने विकसित की गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू.एच. 1402

2 पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज वाली है यह

हिसार, 30 जनवरी (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू.एच. 1402 ईजाद की गई है। 147 दिन में तैयार होने वाली यह अच्छी गुणवता की फसल होगी। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है। ज्ञात रहे कि विश्वविद्यालय ने गत 3 वर्षों में विभिन्न फसलों की 23 किस्में अनुमोदित की हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भुरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एन.आई.ए.डब्ल्यू. 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है।

कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नत्रजन 90, फास्फोरस 60, पोटाश 40, जिंक सल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाहुजा ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्तूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। गेहूं की इस किस्म को विकसित करने में डॉ. एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, आर.एस. बैनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पूजा गुप्ता व पवन कुमार का अहम योगदान रहा।

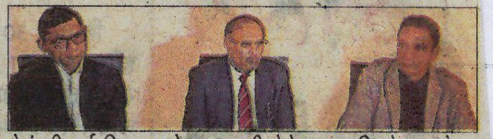

गेहूं की नई किस्म बारे जानकारी देते कुलपति प्रो. कम्बोज।

नई किस्म की विशेषताएं

गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है तथा 147 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वेट (77.7 केजी/एचएल) लोह तत्व (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। अतः पौष्टिकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	31.1.24	2	1-7

एचएयू ने रेतीली, कम उपजाऊ क्षेत्रों के लिए विकसित की गेहूं की किस्म डब्ल्यूएच 1402

कुलपति प्रो. कांबोज बोले-हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ, नई किस्म में दो सिंचाई व मध्यम खाद देने से ही मिलेगी बढ़िया पैदावार

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के गेहूं एवं जौ अनुभाग ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यूएच 1402 विकसित की है। यह किस्म विशेष तौर पर रेतीली, कम उपजाऊ व पानी वाले क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए विकसित की गई है। इस किस्म की खास बात यह है कि सिर्फ दो सिंचाई व मध्यम खाद देने से ही फसल की बढ़िया पैदावार मिलेगी।

चूंकि दिन प्रतिदिन भू-जल अधिक दोहन के कारण जलस्तर नीचे जा रहा है तो यह नई किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी। एचएयू के वैज्ञानिकों की मानें तो इस किस्म से हरियाणा के अलावा पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर के किसानों को भी फायदा मिलेगा। विश्वविद्यालय प्रशासन के मुताबिक अगले दो वर्षों में इसका बीज किसानों को मिलना शुरू हो जाएगा।

एचएयू में पत्रकारों से बातचीत करते कुलपति प्रो. कांबोज व अन्य वैज्ञानिक। संवाद

मंगलवार को विश्वविद्यालय में आयोजित एक प्रेसवार्ता में कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि इस किस्म की औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है। यह किस्म पीला रतुआ, भूरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है।

यह है बिजाई का उचित समय व बीज की मात्रा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि इस किस्म की बिजाई का उचित समय अक्तूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है और बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म में पहली सिंचाई बिजाई के 20-25 दिन बाद शिखर जड़ें निकलते समय और दूसरी सिंचाई बिजाई के 80-85 दिन बाद बालियां निकलते समय करने की जरूरत है।

ये हैं नई किस्म की विशेषताएं

गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती हैं और 147 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वेट (77.7 केजी/एचएल) लोह तत्व (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। पौष्टिकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम

नई किस्म विकसित करने में डॉ. एमएस दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पूजा गुप्ता व पवन कुमार का अहम योगदान रहा।

ये किस्में जल्द होंगी अनुमोदित

विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुसार कुछ किस्में जल्द ही अनुमोदित होंगी, जिनमें सरसों की आरएच 1975, मूंग की एमएच 1762 व एमएच 1772, जई की एचएफओ 906 व मसूर की एलएच 17-19 शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	31.1.24		

दैनिक जागरण

सात राज्यों के रेतीले इलाकों में गेहूं की नई किस्म डब्ल्यूएच 1402 बनेगी वरदान

- दो बार पानी देने पर 68 क्विंटल तक होगी फसल की पैदावार
- हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ

जागरण संवाददाता, हिसार : छह राज्यों के रेतीले इलाके यानी जिन इलाकों में पानी की कमी है वहां बेहतर गेहूं की फसल ली जा सकेगी। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) ने गेहूं की नई किस्म डब्ल्यूएच 1402 विकसित कर ली है। इस किस्म को विकसित करने में विज्ञानियों को आठ साल से ज्यादा समय लग गया। इस नई किस्म में सिर्फ दो बार किसान पानी लगाकर 50 से 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर फसल ले सकते हैं।

प्रो. बीआर काम्बोज • जागरण

यह फसल हरियाणा ही नहीं अपितु देश में पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर के मैदानी भाग के लिए चिह्नित की गई है। हकृवि के गेहूं एवं जौ अनुभाग द्वारा दो पानी व मध्यम खाद से अधिक उपज देने वाली यह किस्म ईजाद की गई है।

हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि रेतीले इलाकों में गेहूं की बेहतर फसल की पैदावार को लेकर रिसर्च चल रही थी। हकृवि विज्ञानियों की तरफ से इस सालों की रिसर्च के बाद इस किस्म को लांच किया गया। हरियाणा सहित मैदानी भाग के इलाकों में इस फसल की किस्म को उगाने से पानी की बचत होगी। अभी किसान रेतीले इलाके में गेहूं की फसल को करीब छह बार पानी देते हैं। उसकी फसल तब जाकर 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होती है। इस नई किस्म में दो बार पानी लगेगा और पैदावार भी ज्यादा होगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	31.1.25	9	2-8

हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ : प्रो. काम्बोज

हकृवि ने विकसित की गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402, दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज वाली विकसित नई किस्म

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

पीला रतुआ, भुरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है। यह किस्म 147 दिन में तैयार हो जाती है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने मंगलवार को पत्रकारों से बातचीत में बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है।

राष्ट्रीय स्तर पर निकाली

कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नत्रजन 90, फास्फोरस 60, पोटाश 40, जिंकसल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई दो पानी में ही अधिक उपज ले सकते हैं, क्योंकि दिन प्रतिदिन भू-जल अधिक दोहन के कारण नीचे जा रहा है। अतः यह नई किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी।

हिसार। प्रेसवार्ता के दौरान पत्रकारों से रूबरू होते हुए कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

डब्ल्यू एच 1402 की बिजाई का उचित समय व बीज की मात्रा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के पाहुजा ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म को दो पानी जिसमें पहला पानी बिजाई के 20-25 दिन बाद शिखर जड़े निकलते समय व दूसरा पानी बीजाई के 80-85 दिन बाद बालियां निकलते समय देने की जरूरत है।

गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की विशेषताएं

गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है तथा 147 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वेट (77.7 केजी/एचएल) लोह तत्व (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। अतः पौष्टिकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

गेहूं एवं जौ अनुभाग के इन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम

विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस टीम में डॉ. एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पूजा गुप्ता व पवन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	30.01.2024	--	--

हकृवि ने विकसित की गेहूं की दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज वाली नई किस्म डब्ल्यू एच 1402

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 30 जनवरी। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भुरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है। कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नत्रजन 90, फास्फोरस 60, पोटाश 40, जिंकसल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई दो पानी में ही अधिक उपज ले सकते हैं, क्योंकि दिन प्रतिदिन भू-जल अधिक दोहन के कारण नीचे जा रहा है। अंत: यह नई किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी।

डब्ल्यू एच 1402 की बिजाई का उचित समय व बीज की मात्रा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाहुजा ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्तूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म को दो पानी जिसमें पहला पानी बीजाई के 20-25 दिन बाद शिखर जड़े निकलते समय व दूसरा पानी बीजाई के 80-85 दिन बाद बालियां निकलते समय देने की जरूरत है।

गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की विशेषताएं

गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है तथा 147 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वेट (77.7 केजी/एचएल) लोह तत्व (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। अत: पौष्टिकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

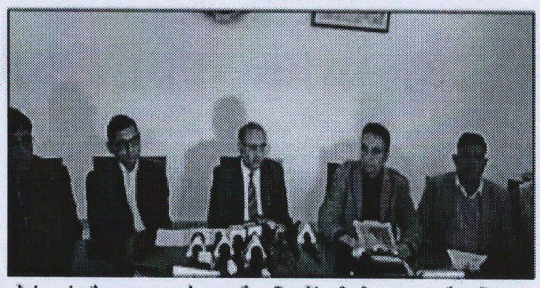

गेहूं एवं जौ अनुभाग के इन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम

विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस टीम में डॉ. एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पूजा गुप्ता व पवन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा। कआह

विश्वविद्यालय ने गत 3 वर्षों में निम्नलिखित किस्में अनुमोदित व चिन्हित की

विश्वविद्यालय ने गत 3 वर्षों में विभिन्न फसलों की 23 किस्में अनुमोदित की हैं जिनमें गेंहू की डीबी डब्ल्यूएच 221 व डब्ल्यू एच 1270, बाजरा की एचएचबी 67 संशोधित-2, सरसों की आरएच 1424 एवं आरएच 1706, चना की एचसी 6, गन्ने की सीओएच 160, मक्का की अंतर संस्थागत पूसा एचएम 4 (शिशु) एवं पूसा एचक्यूपीएम 1 संशोधित, ज्वार की सीएसवी 53 एफ, एचजे 1514 व हाइब्रिड एचजेएच 1513, जई की एचएफओ 427, एचएफओ 529, एचएफओ 607, एचएफओ 611, एचएफओ 707, एचएफओ 806, मटर की एचएफपी 1428 व एचएफपी 1426, बाकला की एचएफबी-2 , चंद्रशूर एचएलएस-4, करेला की एचकेएच 56 शामिल हैं। इनके अलावा छ: किस्मों जिसमें गेंहू की डब्ल्यू एच 1402, सरसों की आरएच 1975, मूंग की एमएच 1762 व एमएच 1772, जई की एचएफओ 906 और मसूर की एलएच 17-19 शामिल हैं ये जल्द ही अनुमोदित हो जाएगी। साथ ही 15 अतिरिक्त किस्में चिन्हित हो चुकी हैं जिनमें मक्के की एचक्यूपीएम-28 (चारा) व एचक्यूपीएम-29 (अनाज), गन्ने की सीओएच 176, जेई की एचएफओ 915, एचएफओ 917 एवं एचएफओ 1014, बाकला की एचएफबी-3, धान की एचकेआर 49, काबली चने की एचके 5, अश्वगंधा की एचएजी-1, मूंगफली की जीएनएच 804 और भिंडी की एचबी 13-11-3, मक्का की अंतर संस्थागत तीन किस्में आईएमएचएसबी 17 आर 16, आईएमएचएसबी 17 आर 17 व एबीएसएच 4-2 किस्में चिन्हित कर ली गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	30.01.2024	--	--

हकृवि ने विकसित की गेहूं की नई किस्म, कई राज्यों को मिलेगा लाभ

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यूएच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भूरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है।

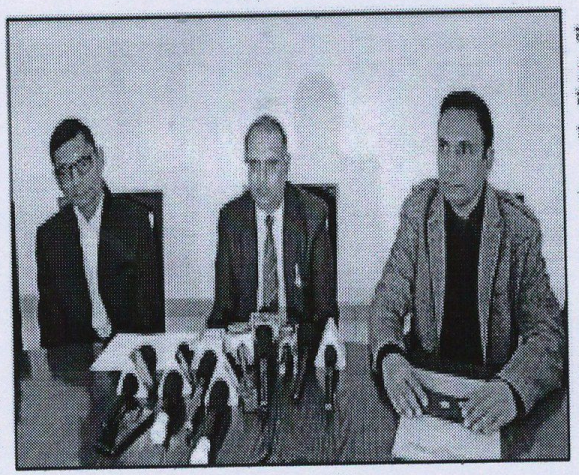

कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नत्रजन 90, फास्फोरस 60, पोटाश 40, जिंकसल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई दो पानी में ही अधिक उपज ले सकते हैं, क्योंकि दिन प्रतिदिन भू-जल अधिक दोहन के कारण नीचे जा रहा है। अतः यह नई किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी।

डब्ल्यू एच 1402 की बिजाई का उचित समय व बीज की मात्रा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाहुजा ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्तूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म को दो पानी जिसमें पहला पानी बीजाई के 20-25 दिन बाद शिखर जड़े निकलते समय व दूसरा पानी बीजाई के 80-85 दिन बाद बालियां निकलते समय देने की जरूरत है।

गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की विशेषताएं

गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है तथा 147 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वेट (77.7 केजी/एचएल) लौह तत्व (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। अतः पौष्टिकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

गेहूं एवं जौ अनुभाग के इन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम

विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस टीम में डॉ. एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पूजा गुप्ता व पवन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।

विश्वविद्यालय ने गत 3 वर्षों में विभिन्न किस्में अनुमोदित व चिंहित की

विश्वविद्यालय ने गत 3 वर्षों में विभिन्न फसलों की 23 किस्में अनुमोदित की है जिनमें गेहूं की डीबी डब्ल्यूएच 221 व डब्ल्यू एच 1270, बाजरा की एचएचबी 67 संशोधित-2, सरसों की आरएच 1424 एवं आरएच 1706, चना की एचसी 6, गन्ने की सीओएच 160, मक्का की अंतर संस्थागत पूसा एचएम 4 (सिगु) एवं पूसा एचक्यूपीएम 1 संशोधित, ज्वार की सीएसवी 53 एफ, एचजे 1514 व हाईब्रिड एचजेएच 1513, जई की एचएफओ 427, एचएफओ 529, एचएफओ 607, एचएफओ 611, एचएफओ 707, एचएफओ 806, मटर की एचएफपी 1428 व एचएफपी 1426, बाकला की एचएफबी-2, चंद्रशूर एचएलएस-4, करेला की एचबीएच 56 शामिल है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	30.01.2024	--	--

हकृवि ने विकसित की गेहूं की दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज वाली नई किस्म

नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है।

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भुरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है।

कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नत्रजन 90, फास्फोरस 60, पोटाश 40, जिंकसल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई दो पानी में ही अधिक उपज ले सकते हैं, क्योंकि दिन प्रतिदिन भू-जल अधिक दोहन के कारण नीचे जा रहा है। अतः यह नई किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी। विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है।

इस टीम में डॉ. एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमबीर, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पूजा गुप्त व पवन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	30.01.2024	--	--

हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ : कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार (चिराग टाइम्स)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भूरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5

प्रतिशत अधिक पैदावार देती है।

कुलपति ने बताया कि गेहूं की डब्ल्यू एच 1402 की बिजाई का उचित समय व बीज की मात्रा कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाहुजा ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्तूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म को दो पानी जिसमें पहला पानी बीजाई के 20-25 दिन बाद शिखर जड़ें निकलते समय व दूसरा पानी बीजाई के 80-85 दिन बाद बालियां निकलते समय देने की जरूरत है।

गेहूं एवं जौ अनुभाग के इन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है।

इस टीम में डॉ. एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पूजा गुप्ता व पवन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा। विश्वविद्यालय ने गत 3 वर्षों में निम्नलिखित किस्में अनुमोदित व चिन्हित करवाईं मक्के की एचक्यूपीएम-28 (चारा) व एचक्यूपीएम-29 (अनाज), जौ की बीएच 176, जई की एचएफओ 915, एचएफओ 917 एवं एचएफओ 1014, बाकला की एचएफबी-3, ग्वार की एचजी 49, काबुली चने की एचके 5, अश्वगंधा की एचएएस-1, मूंगफली की ओएनएचएल 604 और भिंडी की एचबी 13-11-3, मक्का की अंतर संस्थागत तीन किस्में आईएमएचएसबी 17 आर 16, आईएमएचएसबी 17 आर 17 व एचडब्ल्यूएमएच 4-2 किस्में चिन्हित कर ली गई हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमृत धारा	30.01.2024	--	--

हकृवि ने विकसित की गेहूं की दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज वाली नई किस्म डब्ल्यू एच 1402

हिसार से अमृत धारा के लिए फोटो जर्नलिस्ट मनोज मुटानी के साथ संजीव मेहता – चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है। इस में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू–कश्मीर का मैदानी भाग आता है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने आज एक पत्रकार वार्ता में यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में की औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भूरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है। कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नत्रजन 90, फास्फोरस 60, पोटाश 40, जिंकसल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई दो पानी में ही अधिक उपज ले सकते हैं, क्योंकि दिन प्रतिदिन भू–जल अधिक दोहन के कारण नीचे जा रहा है। अतः यह नई किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी।

डब्ल्यू एच 1402 की बिजाई का उचित समय व बीज की मात्रा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवम्बर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म को दो पानी जिसमें पहला पानी बीजाई के 20–25 दिन बाद शिखर जड़ें निकलते समय व दूसरा पानी बीजाई के 80–85 दिन बाद बालियां निकलते समय देने की जरूरत है।

गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है तथा 147 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर भार (77.7 केजी/एचएल) लोह तत्व (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। अतः पौष्टिकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

गेहूं एवं जौ अनुभाग के इन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम

विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस टीम में डॉ. एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पूजा गुप्ता व पवन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।

विश्वविद्यालय ने गत 3 वर्षों में विभिन्न फसलों की 23 किस्में अनुमोदित की है जिनमें गेहूं की डीबीडब्ल्यू 221 व डब्ल्यू एच 1270, बाजरा की एचएचबी 67 संशोधित–2, सरसों की आरएच 1424 एवं आरएच 1706, चना की एचसी 6, गन्ने की सीओएच 160, मक्का की अंतर संस्थागत पूसा एचएम 4 (शिशु) एवं पूसा एचक्यूपीएम 1 संशोधित, ज्वार की सीएसवी 53 एफ, एचजे 1514 व हाइब्रिड एचजेएच 1513, जई की एचएफओ 427, एचएफओ 529, एचएफओ 607, एचएफओ 611, एचएफओ 707, एचएफओ 806, मटर की एचएफपी 1428 व एचएफपी 1426, बाकला की एचएफबी–2, मंडशूर एचएलएस–4, करेला की एचकेएच 56 शामिल हैं। इनके अलावा छः किस्में जिसमें गेहूं की डब्ल्यू एच 1402, सरसों की आरएच 1975, मूंग की एमएच 1762 व एमएच 1772, जई की एचएफओ 906 और मसूर की एलएच 17–19 शामिल हैं ये जल्द ही अनुमोदित हो जाएगी। साथ ही 15 अतिरिक्त किस्में चिन्हित हो चुकी हैं जिनमें मक्के की एचक्यूपीएम–28 (चारा) व एचक्यूपीएम–29 (अनाज), गन्ने की सीओएच 176, जई की एचएफओ 915, एचएफओ 917 एवं एचएफओ 1014, बाकला की एचएफबी–3, धान की एचकेआर 49, काबली चने की एचके 5, अश्वगंधा की एचएजी–1, मूंगफली की जीएनएच 804 और भिंडी की एचबी 13–11–3, मक्का की अंतर संस्थागत तीन किस्में आईएमएचएसबी 17 आर 16, आईएमएचएसबी 17 आर 17 व एचीएसएच 4–2 किस्में चिन्हित कर ली गई है।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जगत क्रांति	31.01.2024	--	--

अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ : कुलपति

हिसार : विनोद गांधी

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भुरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है। कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	31.01.2024	--	--

दैनिक सवेरा टाइम्स
अंधेरे से उजाले की ओर...

हकृवि ने विकसित की गेहूं की अधिक उपज वाली नई किस्म

कुलपति बोले, डब्ल्यू एच 1402 का हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ

सवेरा न्यूज/सुरेंद्र सोढी

हिसार, 30 जनवरी : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भूरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है। कुलपति ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म रेतीली, कम उपजाऊ व कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निकाली गई है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नाइट्रोजन 90, फास्फोरस 60, पोटाश 40, जिंकसल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। अतः यह नई किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी।

हकृवि में आयोजित प्रेसवार्ता के दौरान पत्रकारों से रूबरू होते हुए कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

डब्ल्यू एच 1402 की बिजाई का उचित समय व बीज की मात्रा

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एस.के.पाहुजा ने बताया कि गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्तूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म को दो पानी जिसमें पहला पानी बीजाई के 20-25 दिन बाद शिखर जड़े निकलते समय व दूसरा पानी बीजाई के 80-85 दिन बाद बालियां निकलते समय देने की जरूरत है।

गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की विशेषताएं

गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डा. पवन ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है तथा 147 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व लाल रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 100 सैंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वेट (77.7 केजी/एचएल) लोह तत्व (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। अतः पौष्टिकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

गेहूं एवं जौ अनुभाग के इन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम : विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस टीम में डा. एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पूजा गुप्ता व पवन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।